भारत, पाकिस्तान और चीन की परमाणु और मिसाइल क्षमताएं

प्रस्तावना

दक्षिण एशिया और समकालीन वैश्विक भू-राजनीति में सुरक्षा और शक्ति संतुलन (Balance of Power) का मुद्दा हमेशा से बेहद संवेदनशील रहा है। इस क्षेत्र में भारत, पाकिस्तान और चीन—तीन ऐसे पड़ोसी देश हैं जो परमाणु हथियारों और अत्याधुनिक मिसाइल तकनीकों से लैस हैं। हाल के वर्षों में, वैश्विक रणनीतिक परिदृश्य तेजी से बदला है। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) जैसी प्रमुख रक्षा संस्थाओं की रिपोर्टों के अनुसार, ये तीनों देश अपनी परमाणु क्षमताओं का आधुनिकीकरण और विस्तार कर रहे हैं, जिसने पूरे क्षेत्र में एक रणनीतिक प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया है।

चीन की परमाणु और मिसाइल क्षमता: वैश्विक महाशक्ति बनने की होड़

चीन इस तिकड़ी में सबसे बड़ी सैन्य और परमाणु शक्ति है। चीन का मुख्य रणनीतिक लक्ष्य केवल क्षेत्रीय संतुलन ही नहीं, बल्कि अमेरिका जैसी वैश्विक महाशक्ति की बराबरी करना है।

- **परमाणु शस्त्रागार:** अनुमानों के अनुसार, चीन के पास लगभग **620 परमाणु वारहेड** हैं, और वह दुनिया में सबसे तेजी से अपने परमाणु हथियारों की संख्या बढ़ा रहा है।
- **मिसाइल तकनीक:** चीन के पास 'डोंगफेंग' (DF) श्रृंखला की मिसाइलें हैं। इसकी **DF-41** जैसी इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइलें (ICBM) 12,000 से 15,000 किलोमीटर तक मार कर सकती हैं, जिसकी जद में पूरा अमेरिका और एशिया आते हैं।
- **रणनीतिक प्रगति:** चीन ने जमीन के नीचे मिसाइल साइलो (Silo fields) का एक बड़ा नेटवर्क तैयार किया है और उसकी पनडुब्बी आधारित परमाणु क्षमता (JL-3 मिसाइलें) भी अत्यंत घातक हैं।

भारत की क्षमता: न्यूनतम विश्वसनीय निवारक और आत्मनिर्भरता

भारत की परमाणु नीति का मुख्य आधार रक्षात्मक है, जिसका उद्देश्य किसी भी बाहरी आक्रमण को रोकना (Deterrence) है। भारत दुनिया के उन गिने-चुने देशों में शामिल है जिसके पास 'न्यूक्लियर ट्रायड' (जमीन, हवा और पानी तीनों से परमाणु हमला करने की क्षमता) है।

- **परमाणु शस्त्रागार:** भारत के पास वर्तमान में लगभग **190 परमाणु वारहेड** हैं, जो इसकी सुरक्षा जरूरतों के लिहाज से एक 'न्यूनतम विश्वसनीय निवारक' (Minimum Credible Deterrent) के रूप में तैयार किए गए हैं।

Defence HRPG

- **मिसाइल शक्ति:** भारत की 'अग्नि' (Agni) श्रृंखला देश की सुरक्षा की रीढ़ है। **अग्नि-5** एक अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल (ICBM) है, जिसकी मारक क्षमता 5,000 किलोमीटर से अधिक है और यह पूरे चीन को कवर करती है।
- **तकनीकी विकास:** भारत ने हाल ही में **MIRV** (मल्टीपल इंडिपेंडेंटली टारगेटेबल री-एंट्री व्हीकल) तकनीक का सफल परीक्षण किया है, जिससे एक ही मिसाइल से अलग-अलग ठिकानों पर कई परमाणु वारहेड दागे जा सकते हैं। इसके अलावा आईएनएस अरिहंत श्रेणी की परमाणु पनडुब्बियां सागर से परमाणु हमले की क्षमता देती हैं।
- **परमाणु नीति:** भारत 'नो फर्स्ट यूज़' (No First Use - पहले इस्तेमाल न करने) के सिद्धांत का कड़ाई से पालन करता है।

पाकिस्तान की क्षमता: रणनीतिक असंतुलन की काट

पाकिस्तान की परमाणु और मिसाइल क्षमता का विकास मुख्य रूप से भारत की पारंपरिक सैन्य बढ़त का मुकाबला करने के लिए केंद्रित रहा है।

- **परमाणु शस्त्रागार:** पाकिस्तान के पास लगभग **170 परमाणु वारहेड** हैं। वह अपने शस्त्रागार का विस्तार मुख्य रूप से शॉर्ट-रेंज और टैक्टिकल (सामरिक) परमाणु हथियारों में कर रहा है।
- **मिसाइल तकनीक:** पाकिस्तान के पास लंबी दूरी की ICBM मिसाइलें नहीं हैं, लेकिन उसके पास 'शाहीन' (Shaheen), 'गौरी' (Ghauri) और 'गज़नवी' जैसी कम और मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलें हैं, जो पूरे भारत को निशाना बनाने में सक्षम हैं। वह 'बाबर' (Babur) जैसी क्रूज़ मिसाइलों को भी उन्नत कर रहा है।
- **परमाणु नीति:** भारत के विपरीत, पाकिस्तान की कोई 'नो फर्स्ट यूज़' नीति नहीं है। वह अपनी सुरक्षा के लिए परमाणु हथियारों के पहले इस्तेमाल का विकल्प खुला रखता है।

तीनों देशों के बीच सुरक्षा चुनौतियां और शक्ति संतुलन

इन तीनों देशों की क्षमताओं का यह त्रिकोणीय समीकरण दक्षिण एशिया को दुनिया के सबसे संवेदनशील क्षेत्रों में से एक बनाता है। चीन का सैन्य विस्तार भारत को अपनी क्षमताएं बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है, जिसे देखकर पाकिस्तान अपनी मिसाइल प्रणालियों को और तेज करता है। इसे रक्षा विशेषज्ञ "क्लासिक सिक्योरिटी डिलेमा" (Sursecurity Dilemma) कहते हैं। हालांकि, इन हथियारों की मौजूदगी ने सीधे और

Defence HRPG

बड़े युद्धों को रोकने का काम भी किया है, क्योंकि तीनों देश जानते हैं कि परमाणु युद्ध का परिणाम सभी के लिए विनाशकारी होगा।

निष्कर्ष

भारत, पाकिस्तान और चीन की परमाणु और मिसाइल क्षमताएं यह दर्शाती हैं कि क्षेत्र में हथियारों की होड़ थमी नहीं है। जहां चीन वैश्विक स्तर पर खुद को स्थापित कर रहा है, वहीं भारत अपनी संप्रभुता की रक्षा के लिए स्वदेशी और अत्याधुनिक तकनीकों (जैसे MIRV और न्यूक्लियर ट्रायड) को मजबूत कर रहा है, और पाकिस्तान रक्षात्मक मुद्रा में जुटा है। इस नाजुक संतुलन को बनाए रखने और किसी भी संभावित परमाणु दुर्घटना या गलतफहमी से बचने के लिए इन देशों के बीच निरंतर संवाद और उत्तरदायी रणनीतिक नीतियों की अत्यंत आवश्यकता है।

Defence- HRPG